लोपेज़ लोमॉग
“यह हमारी नियति है कि दूसरों के जीवन में बदलाव लाने के लिए हम अपनी प्रतिभा का उपयोग करें.”

लोपेज़ लोमॉंग

"यह हमारी नियति है कि दूसरों के जीवन में बदलाव लाने के लिए हम अपनी प्रतिभा का उपयोग करें."

नन्हें साइमन ने उस कलाकृति को उठाया जो उसने अभी-अभी बनाई थी. उसने मुस्कराते हुए उस कृति को देखा. एक दिन पहले ही एक व्यक्ति देवदूत की तरह आया था. वह अपने साथ शुभ समाचार, ड्राइंग किताबें और रंगीन पेंसिलें लाया था. कई बच्चे उसके समीप आग के पास इकट्ठे हो गए थे. चंद्रमा ने रात को प्रकाशित करने के साथ बच्चों के मन में आशा की ज्योति भी जला दी थी. बच्चे मंत्रमुग्ध से उस आदमी की कहानी सुन रहे थे जो दूसरों की सहायता करने के लिए प्रसिद्ध था. यह एक अविश्वसनीय लेकिन सत्य कहानी थी जिसे सुनकर बच्चों की आँखों से खुशी के आँसू बहने लगे थे और उत्साह में वह तालियाँ भी बजा रहे थे.
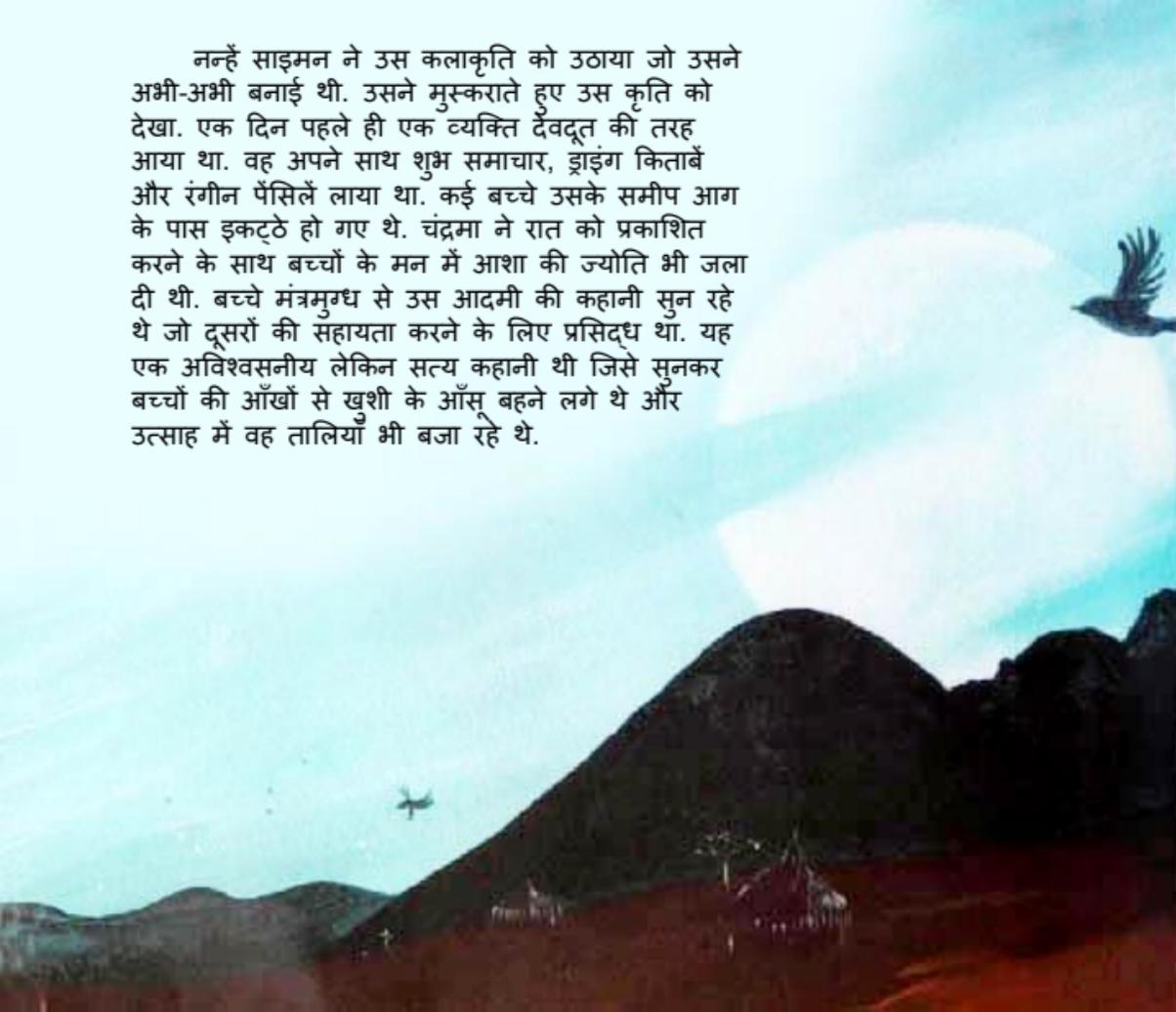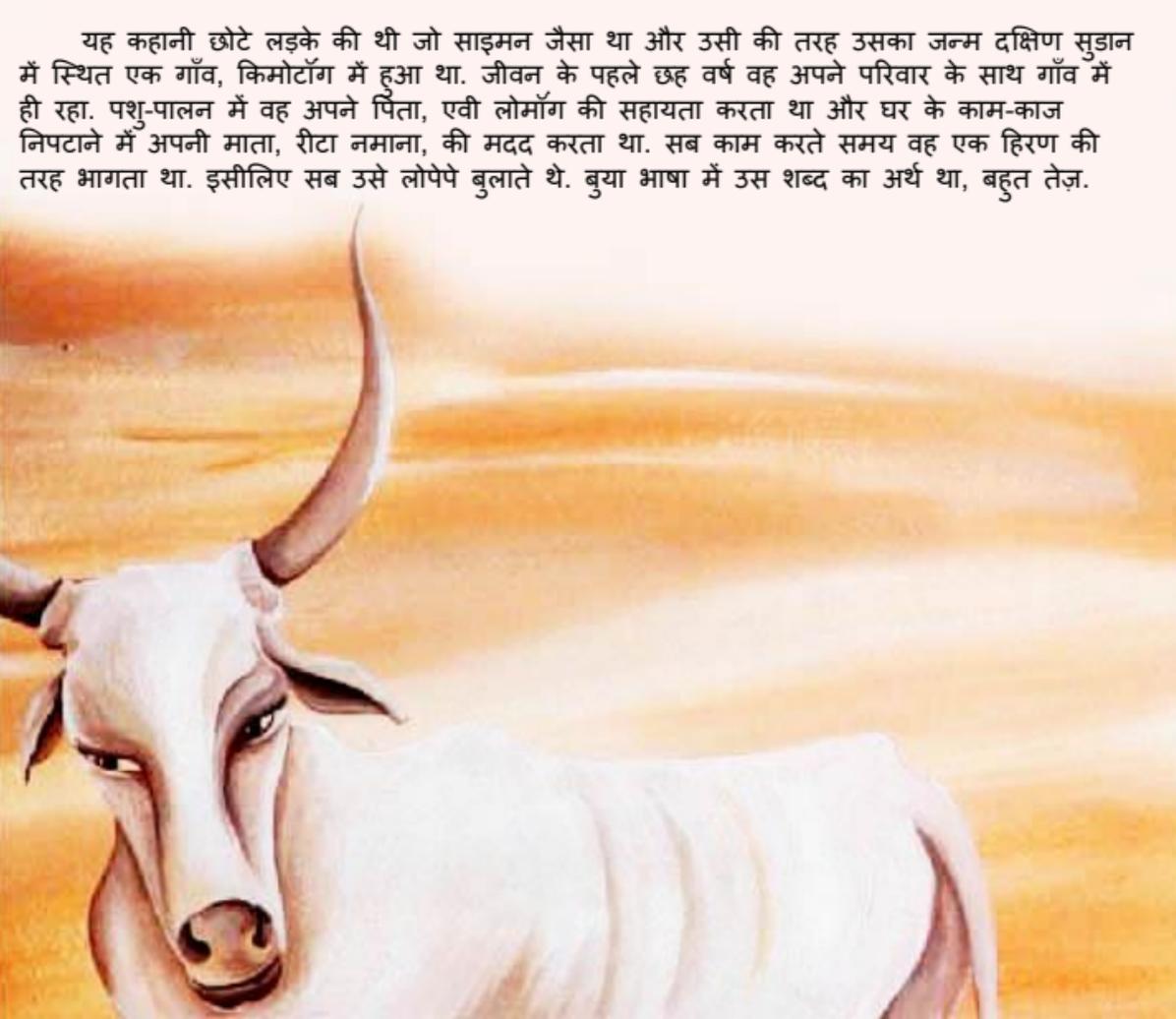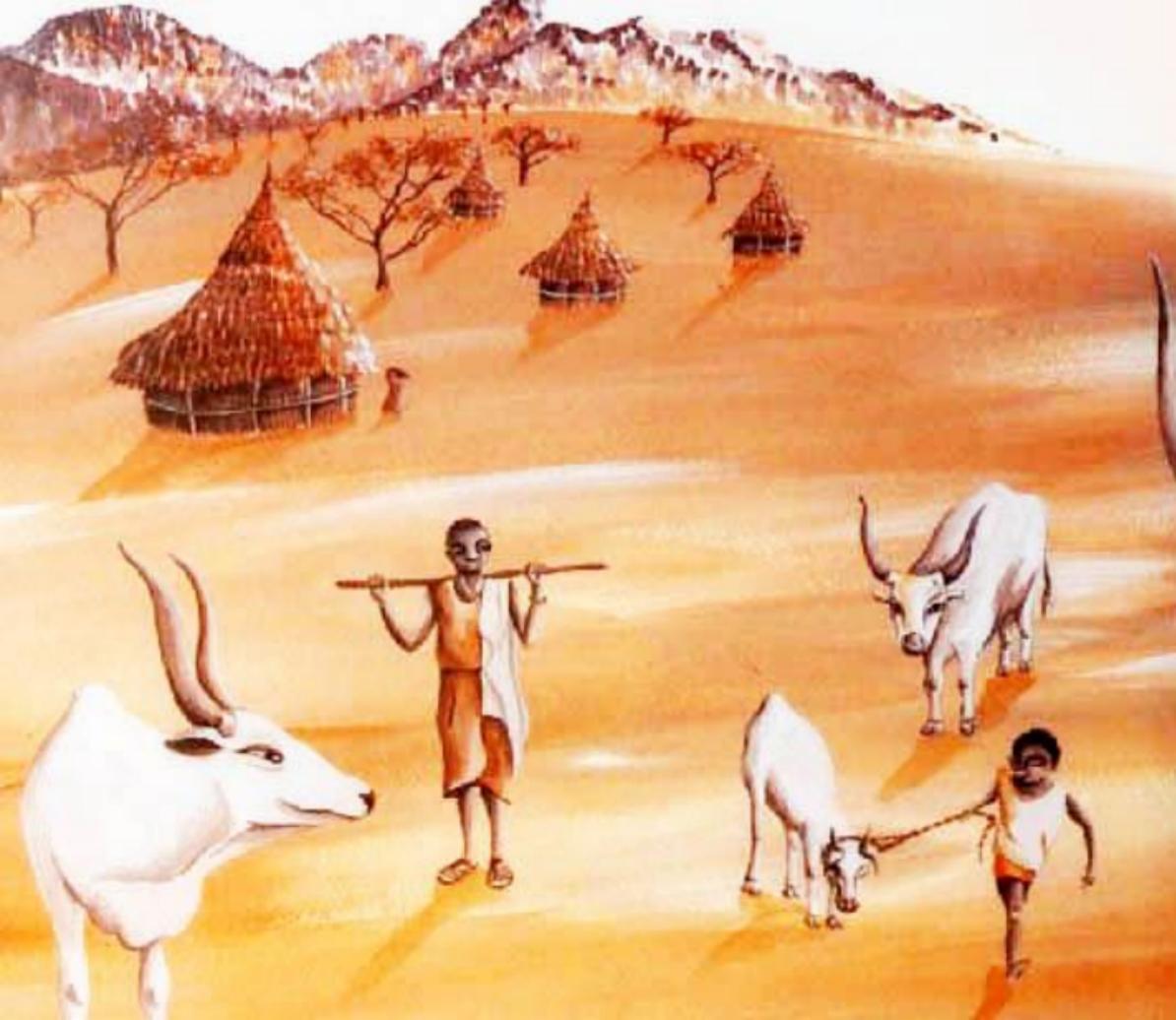
यह कहानी छोटे लड़के की थी जो साइमन जैसा था और उसी की तरह उसका जन्म दक्षिण सुडान में स्थित एक गाँव, किमोटॉग में हुआ था. जीवन के पहले छह वर्ष वह अपने परिवार के साथ गाँव में ही रहा. पशु-पालन में वह अपने पिता, एवी लोमॉग की सहायता करता था और घर के काम-काज निपटाने में अपनी माता, रीटा नमाना, की मदद करता था. सब काम करते समय वह एक हिरण की तरह भागता था. इसीलिए सब उसे लोपेपे बुलाते थे. बुया भाषा में उस शब्द का अर्थ था, बहुत तेज़.

गर्मियों की एक रविवार के दिन सब कुछ बदल गया. लोपेपे अपने माता-पिता के साथ एक विशाल पेड़ के नीचे एक धार्मिक अनुष्ठान में भाग ले रहा था. अचानक विद्रोही सैनिकों का एक दल शोर मचाता हुआ वहाँ आ पहुँचा. लोपेपे को लगा कि एक दैत्य समान आदमी ने उसे दबोच कर पकड़ लिया था. वह सैनिक उसे उसकी माँ की गोद से खींच कर ले गया. कई और बच्चों को भी वह लोग उठा कर ले गये और सब को सेना के एक ट्रक में फेंक दिया. ट्रक अनजान सड़क पर दौड़ने लगा. सड़क पर गड्ढे थे जिसके कारण ट्रक हिचकोले ले रहा था और बच्चे बार-बार यहाँ-वहाँ लुढ़क रहे थे. यह सोच कर कि उसका बचपन उसके गाँव, किमोटॉग, में ही सदा के लिए छूट गया था, उसकी आँखों से आँसू बहने लगे.
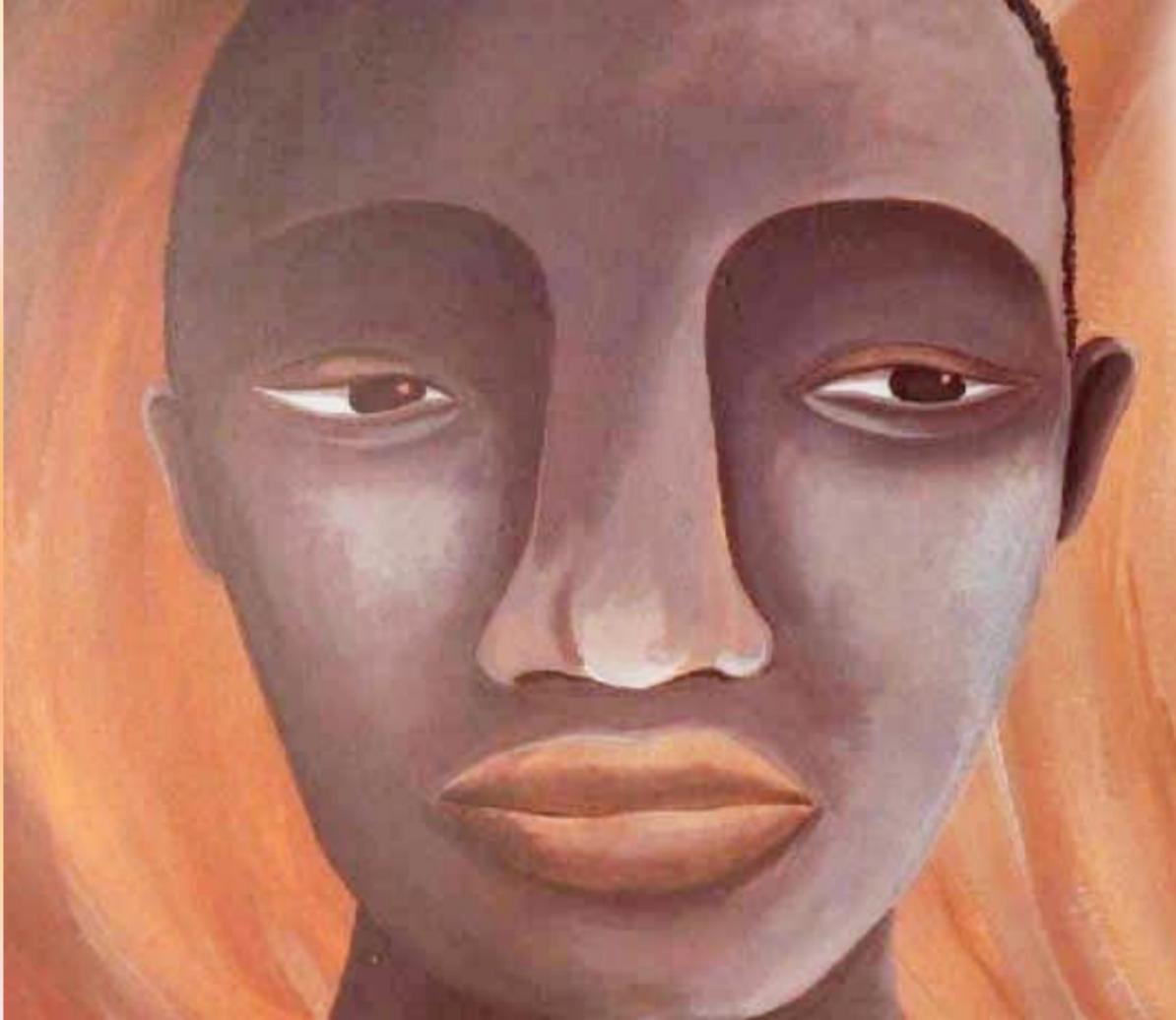
सैनिकों ने सब बच्चों को लकड़ी की बनी एक कोठरी में बंद कर, बाहर से ताला लगा दिया. बच्चे भूखे थे और रात में ठंड भी अधिक थी. तेज़ दौड़ने वाला लोपेपे स्वप्न देखने लगा कि वह अपने परिवार का पास वापस आ गया था.

एक रात उस अँधेरी कोठरी में उसे आशा की एक किरण दिखाई दी. उसकी भेंट तीन लड़कों से हुई, जो आयु में उससे बड़े थे. उन्होंने से विश्वास दिलाया कि वह उसकी रक्षा करेंगे. उसके लिए वह लड़के देवदूत समान थे. उन्होंने उसे विश्वास दिलाया कि एक दिन वह अपनी माँ से फिर मिल पायेगा. वह लड़के तीन सप्ताह से वहाँ थे और उन्होंने वहाँ से भाग जाने की योजना बना रखी थी. लोपेपे उनके साथ जायेगा लेकिन उन्होंने लोपेपे को चेतावनी दी कि उसे बहुत भागना पड़ेगा, उसे ऐसे भागना पड़ेगा जैसे आँधी उसे अपने साथ उड़ा कर ले जा रही हो. उसे भागना होगा, बिना पीछे देखे, बिना आराम किए.

और ऐसा ही उन सब ने किया. तार की बाड़ में बने एक छेद को पार कर वह चारों, बिना किसी के देखे, वहाँ से भाग गए. वह चारों नंगे पाँव, हिरणों समान, सवाना के पार तेज़ी से भागते गए. वह तीन दिन तक भागते रहे.

वह कीनिया की सीमा तक आ पहुँचे. वहाँ काकुमा में स्थित संयुक्त राज्य के एक शरणार्थी कैंप में उन्हें शरण मिली.
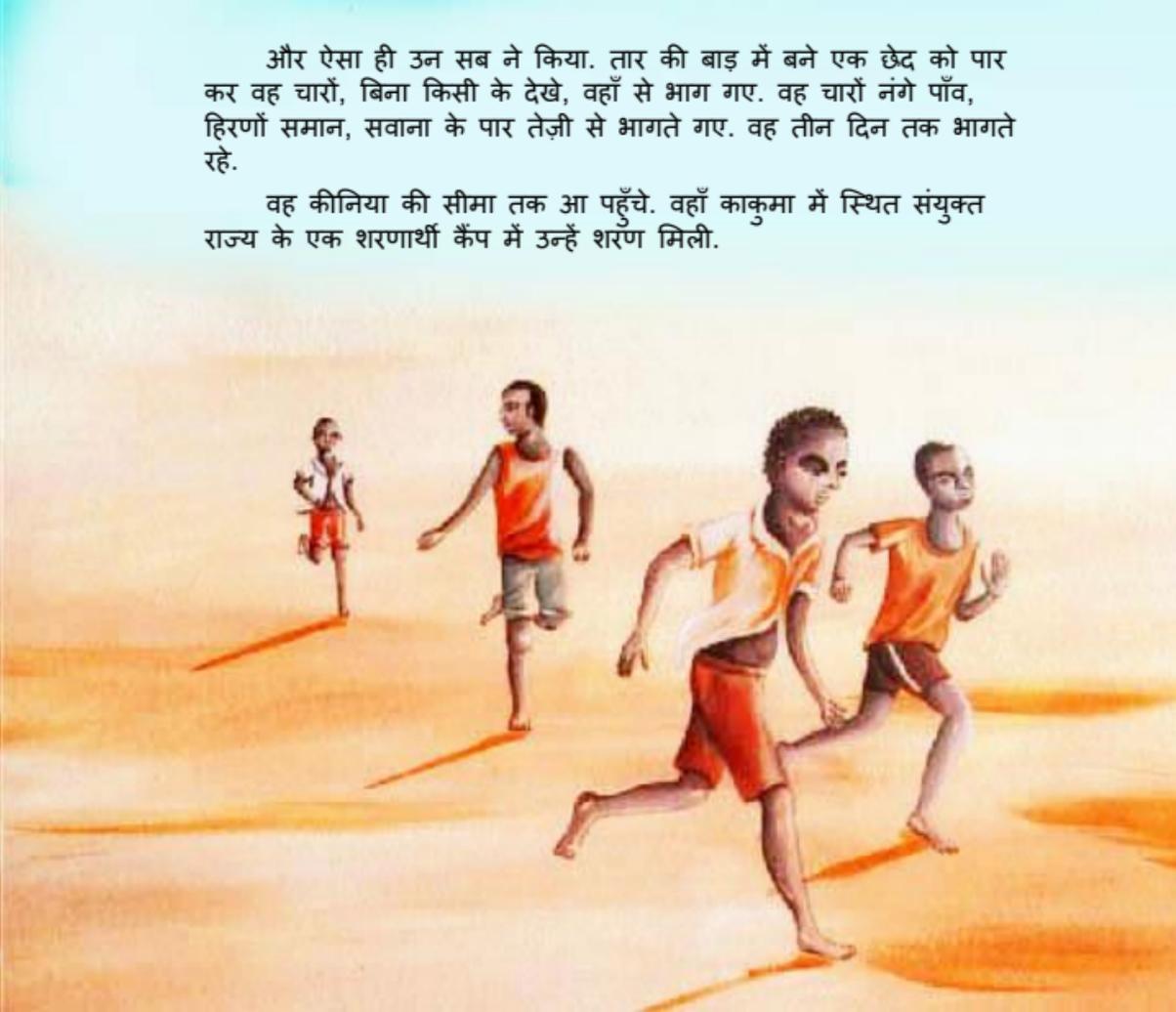
वहाँ लोपेपे को ग्यारह छोटे लड़कों का एक नया परिवार मिला जो उसकी तरह अपने परिवारों से बिछुड़ हुए थे. वह सब एक टैंट में रहते थे और थोड़ा सा खाना जो उन्हें मिलता था उसे आपस में बांट कर खा लेते थे. तीन देवदूतों से फिर कभी उसकी भेंट न हुई. जो लड़के उसके साथ भागे थे वह कहीं गायब हो गए थे.

लोपेपे को फुटबॉल खेलना अच्छा लगता था, हालांकि काकुमा में यह एक खेल से अधिक जीवन जीने का एक तरीका था. यह खेल अपने खाली पेट से ध्यान हटाने में और लगातार भोजन के बारे में न सोचने में उसकी मदद करता था.

हर दिन नये शरणार्थी वहाँ आ रहे थे. कैंप बहुत बड़ा हो गया था. फुटबॉल खेलने के लिए अपनी बारी की प्रतीक्षा करते हुए, लोपेपे हर दिन 18 मील दौड़ता था जो कैंप की परिधि की लंबाई थी. यद्यपि बहुत गर्मी थी और उसे प्यास लगी होती थी फिर भी वह दौड़ता था क्योंकि दौड़ने से वह अपने को स्वतंत्र महसूस करता था और उसे लगता था कि वह अपनी माँ से साथ जुड़ा हुआ था, जो उससे बहुत दूर पर विशाल आकाश कि नीचे ही थी.
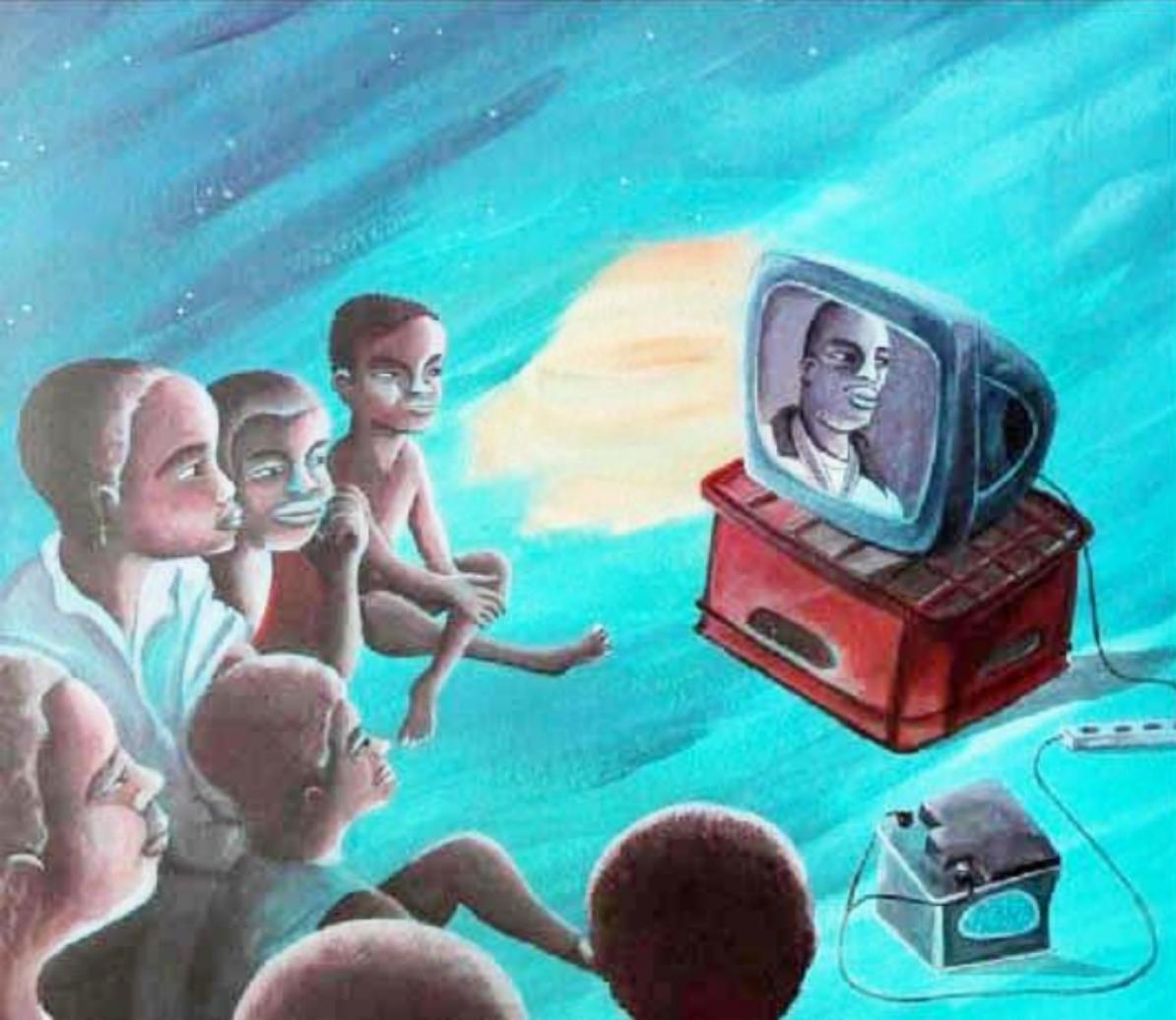
जिस बात ने लोपेपे को सबसे अधिक प्रभावित किया था वह थी टीवी पर पहली बार ओलिम्पिक खेल देखना. एक दिन कुछ लड़के चुपके से कैंप से निकल कर एक किसान के घर में आ गये थे और वहाँ उन्होंने एक छोटे से श्याम-श्वेत टीवी पर ओलिम्पिक खेल देखे थे. यह खेल थे 2000 के सिडनी ओलिम्पिक. एक धावक, माइकल ज़ॉन्सन, सदा के लिए उसका जीवन बदलने वाला था. जैसे ही माइकल ज़ॉन्सन अपना मैडल लेने के लिए पोडियम पर आया उसकी आंखों में आँसू झलकने लगे. यह दृश्य देखकर लोपेपे को लगा कि एक दिन वह भी ओलिम्पिक खिलाड़ी बनेगा.

उस रात लोपेपे जब अपने कैंप लौट आया तो वह जानता कि उसका भविष्य कैसा होगा.
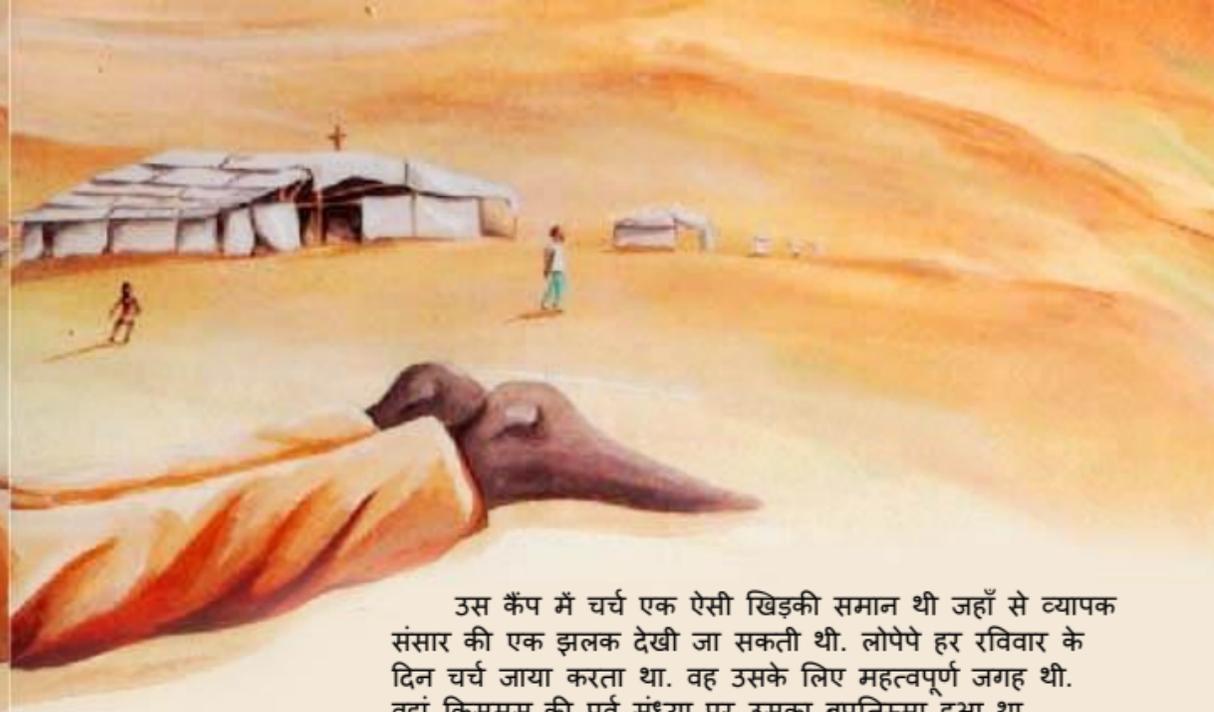
उस कैंप में चर्च एक ऐसी खिड़की समान थी जहाँ से व्यापक संसार की एक झलक देखी जा सकती थी. लोपेपे हर रविवार के दिन चर्च जाया करता था. वह उसके लिए महत्वपूर्ण जगह थी. वहां क्रिसमस की पूर्व संध्या पर उसका बपतिस्मा हुआ था.

अक्तूबर के एक रविवार के दिन पादरी ने उन्हें आश्चर्यजनक समाचार सुनाया. अमरीका के कुछ परिवार कैंप से कुछ बच्चों को गोद लेने वाले थे. अमरीका में उन्हें एक नया जीवन मिलने वाला था. चुने जाने के लिए बच्चों को अंग्रेज़ी में एक लेख लिखना होगा. लोपेपे ने अपने लेख में अपने मन के विचार बहुत ही भावनापूर्ण शब्दों में लिखे. उसके मित्रों ने उस लेख को अंग्रेज़ी में अनुवाद करने में उसकी सहायता की.

वह जानता था कि काकुमा कैंप से दूर, बहुत दूर एक नया संसार उसकी प्रतीक्षा कर रहा था.

लोपेपे चुन लिया गया और कुछ माह बाद 'धातु से बने एक पक्षी' में बैठ कर वह अमरीका की ओर चल दिया. बचपन में ऐसे पक्षी उसने किमोटॉग के ऊपर उड़ते देखे थे. काकुमा शरणार्थी कैंप में उसने दस वर्ष बिताये थे. लेकिन अब उसके जीवन में एक परिवर्तन आ रहा था. युद्ध और अकाल की विभीषिका पीछे छूट गई थी लेकिन उसके मित्र अभी भी वहीं थे.

रॉब और बारबरा रोजर्स ने उसे गोद लिया था. न्यू यॉर्क में सायराक्यूस हवाई अड्डे पर वह दोनों उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे. उनके हाथ में एक तख्ती थी जिस पर लिखा था, स्वागतम. अब अमरीका ही उसका देश था. लंबी यात्रा के बाद वह विभिन्न संवेदनाओं से अभिभूत हो गया था. बहुत कुछ नया था जो उसे अभी जानना था. उसका नया घर बहुत बड़ा था. उसका अपना अलग बेडरूम था, उसकी अपनी साइकिल और एक बॉल थी.
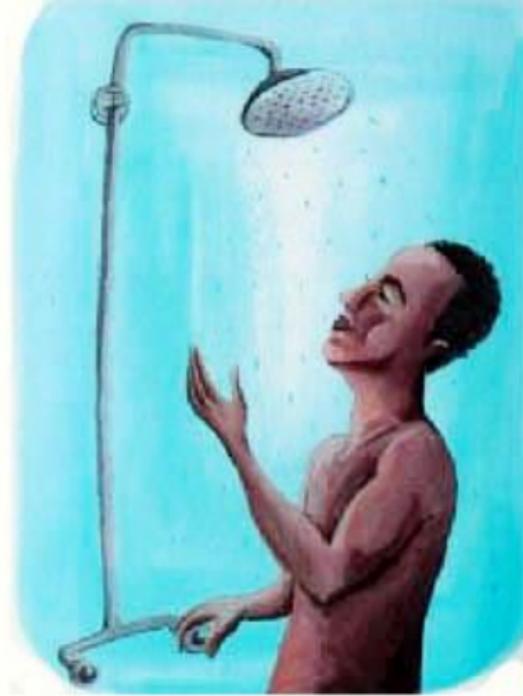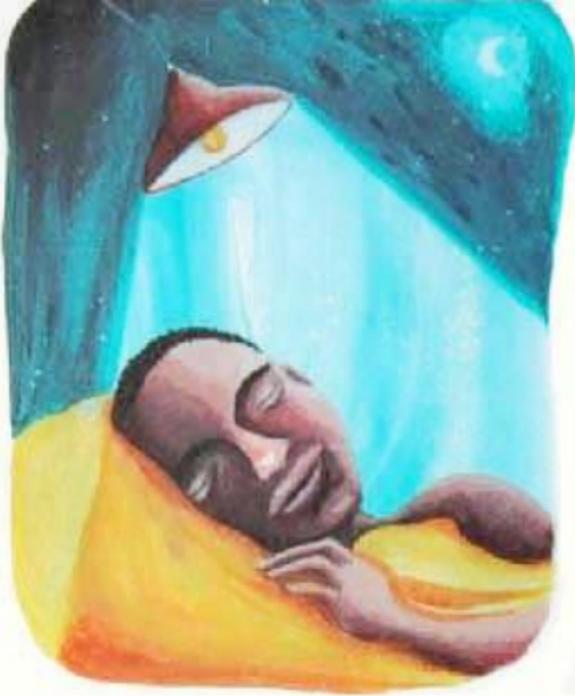
पहली रात वह रोशनी बंद किए बिना ही सोया. उसे पता ही न था कि जो रोशनी सूर्य समान हर वस्तु को प्रकाशित कर सकती थी उसे एक स्विच दबा कर बंद भी किया जा सकता था.

उसकी अगली खोज थी बाथरुम में लगा शावर. उसमें से गर्म पानी भी आ रहा था और ठंडा भी. शीघ्र ही वह समझ गया कि पानी के तापमान को कैसे कम किया जा सकता था. पर वह भयभीत था कि बार-बार नहाने से उसकी चमड़ी का रंग सफेद तो न हो जायेगा.

नये घर में आने के कुछ समय बाद लोग उसे लोपेज़ बुलाने लगे थे.

सब कुछ इतना आश्चर्यजनक था कि वह सोचने लगा कि कहीं किसी से गलती तो न हो गई थी. धीरे-धीरे उसके मन से यह बात निकलने लगी कि वह अपने परिवार से बिछुड़ा बच्चा था. अपने नये माता-पिता के देखभाल से वह अपने प्रति आश्वस्त होने लगा.

कुछ दिनों बाद उसके जीवन में जिम पैचिया ने प्रवेश किया. जिम टल्ली हाई स्कूल में क्रास कंटरी रन्निंग टीम का कोच था. उसने लोपेज़ को समझाया कि वह टीम में आ जाये. उसने लोपेज़ को एक टी-शर्ट दिखाई जिसकी पिछली तरफ उसका नाम छपा था, लोमॉग यह आसान निर्णय न था. लोपेज़ फुटबॉल खेलना चाहता था. वह दौड़ना नहीं चाहता था. लेकिन टी-शर्ट, जिस पर उसका नाम छपा था, बहुत लुभावनी थी. उसने पैचिया का सुझाव मान लिया. क्रास कंटरी रन्निंग टीम का कप्तान जल्दी ही उसका अच्छा मित्र बन गया.
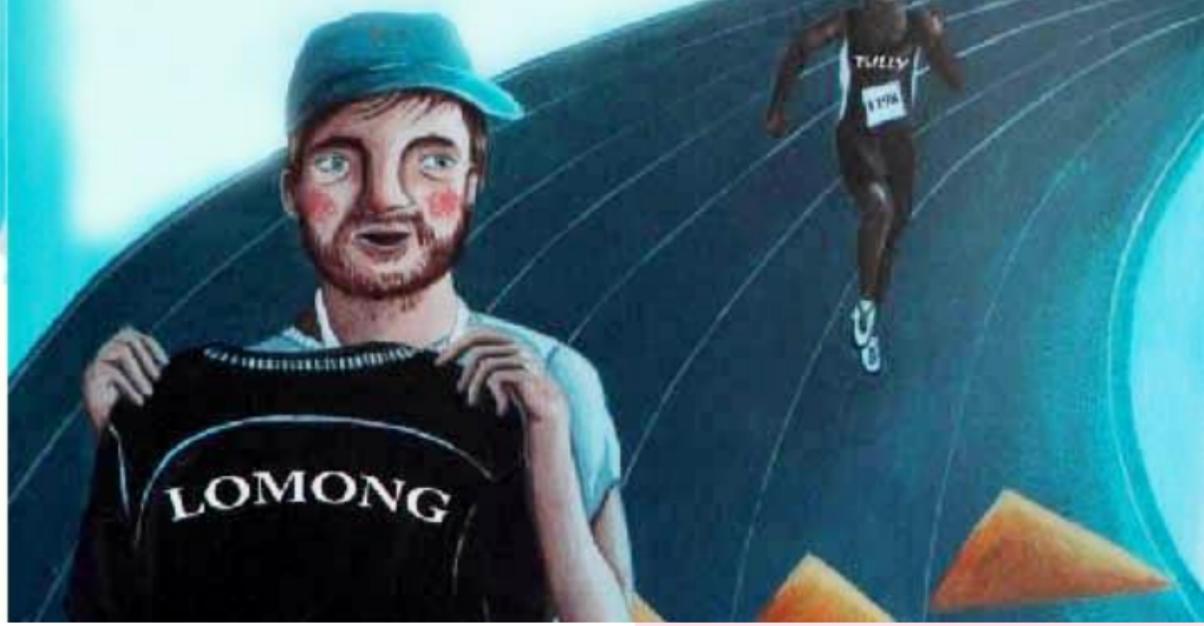
अमरीका में आने के चार माह बाद शरद् ऋतु में एक दिन वह अपने अमरीकी माता-पिता के साथ नाव की सैर करने के लिए उस झील में गया जो उनके घर के पास थी. नाव की सैर करते हुए उसने पतझड़ के सुंदर रंगों को देखा. पेड़ों पर पत्ते लाल और पीले रंग के थे. काकुमा में मौसम में कोई परिवर्तन नहीं आता था. वहाँ हर समय मौसम शुष्क रहता था और धूल भरी आँधियाँ चलती थीं रॉब रोजर्स ने नाव को झील के बीच में रोक दिया. अचानक लोपेज़ अपने मन का बात अपने माता-पिता को सुनाने लगा. पहली बार उसने उन्हें अपने बीते हुए दिनों के बारे में बताया. कैंप में बिताये दिनों के बारे में बताया और यह भी बताया कि वह अपने को कितना अकेला महसूस करता था. उसने देखा कि उसके अमरीकी माता-पिता उससे कितना प्यार करते थे और जो कुछ उसने बचपन में खोया था वह उसे देना चाहते थे.

रोजर परिवार ने एक और लड़के को गोद लिया जो अपने परिवार से बिछुड़ गया था. उस लड़के का नाम था डोमिनिक. फिर उन्होंने पीटर और उसके बाद एलेक्स को भी अपना लिया.
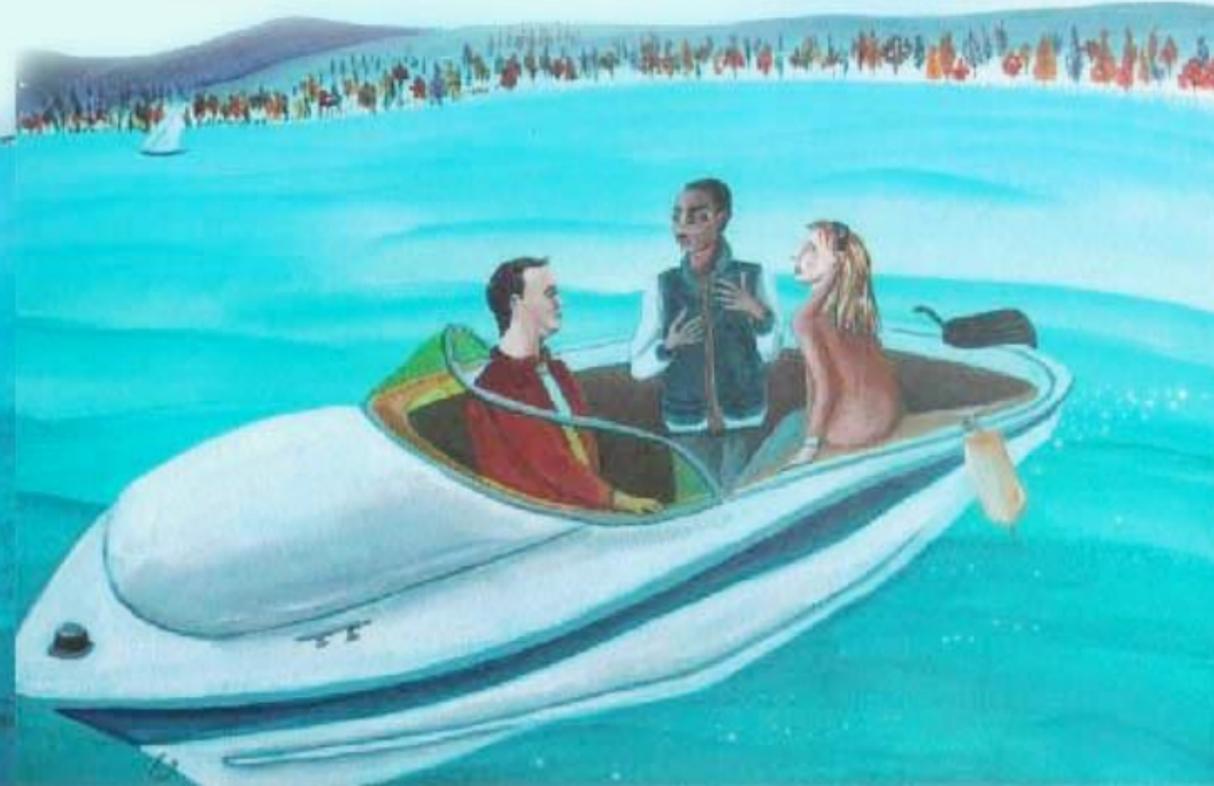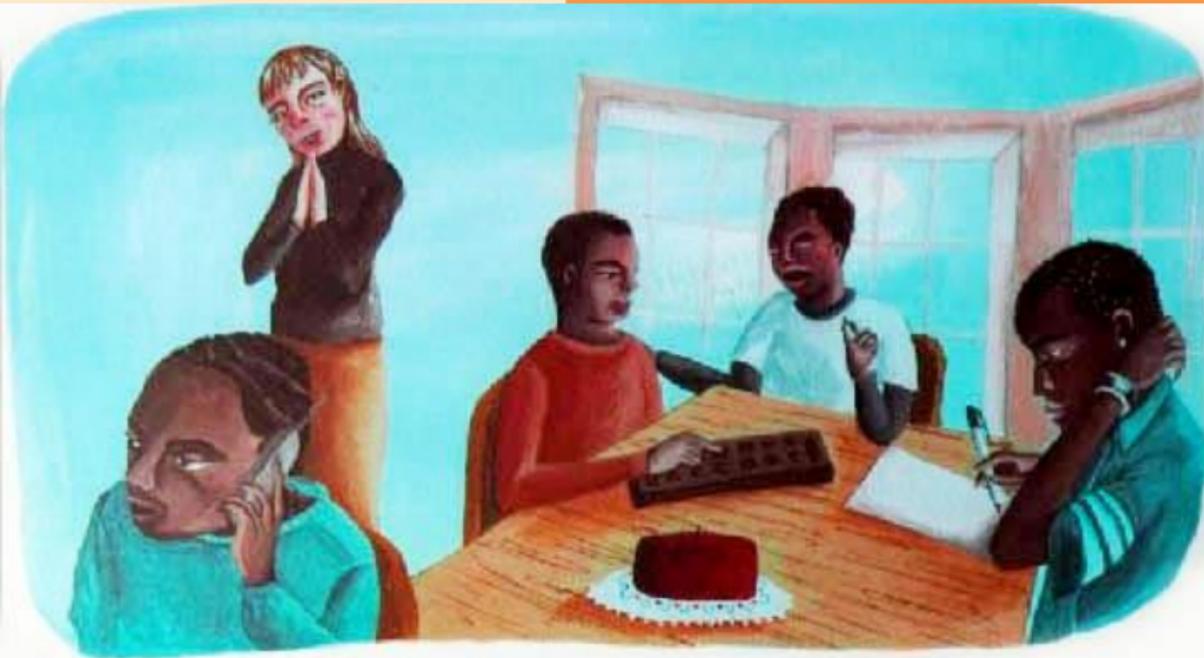
कुछ समय बाद एक बहुत ही आश्चर्यजनक और पूरी तरह अप्रत्याशित घटना घटी. लोपेज़ को पता चला कि जिस माँ ने उसे जन्म दिया था वह कीनिया में रह रही थी. वह उसे ढूँढने काकुमा भी गई थी. उसे माँ का फोन नंबर भी मिल गया, जब उसने माँ को फोन किया तो उसका दिल तेज़ी से धड़क रहा था. इतने वर्षों बाद जब उसने माँ की आवाज़ सुनी तो उसकी आँखों से आँसू बहने लगे. वह दोनों जीवित थे और उन्होंने एक-दूसरे को ढूँढ लिया था.
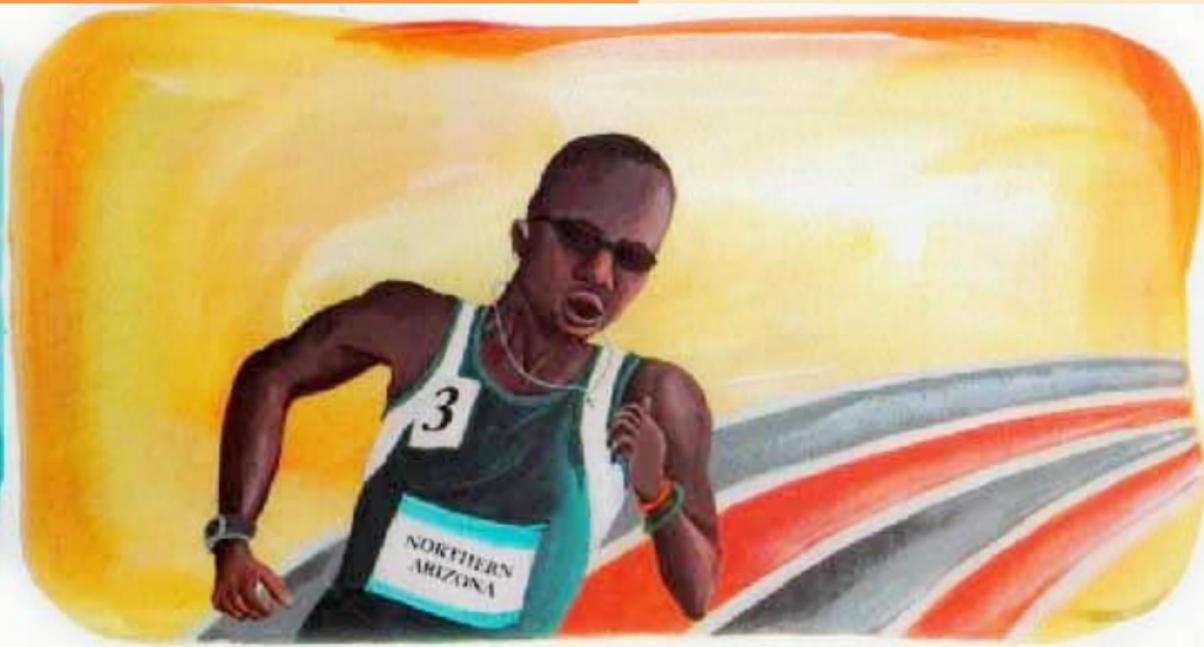
उन्होंने यथाशीघ्र एक-दूसरे से मिलने का निर्णय लिया. वह एक-दूसरे से बहुत दूर थे और लोपेज़ को शिक्षा के लिए पहले नॉर्फोक युनिवर्सिटी और फिर एथेलेटिक्स में पढ़ाई करने के लिए उत्तरी ऐरिज़ोना युनिवर्सिटी जाना था.

एक विशिष्ट एथलीट बनने का मार्ग धीरे-धीरे स्पष्ट होता जा रहा था. जिस दिन लोपेज़ ने अपनी पहली 1500 मीटर की दौड़ जीती उस दिन उसने उस मार्ग पर अपने पद-चिन्ह बना दिए थे.

लोपेज़ जब अमरीका का नागरिक बन गया वह प्रसन्नता से अभिभूत हो गया. थोड़े समय बाद अपनी माँ रीता से मिलने के लिए कीनिया आया. यह बहुत ही भावपूर्ण क्षण था. माँ प्रसन्नता से नाचने लगी और उसने लोपेज़ पर किण्वित आटा छिड़का. फिर अपने माता-पिता के साथ वह अपने गाँव किमोटॉग आया. वहाँ के लोग समझे बैठे थे कि उसकी मृत्यु हो चुकी है, पर उसे जीवित देखकर वह बहुत प्रसन्न हुए.
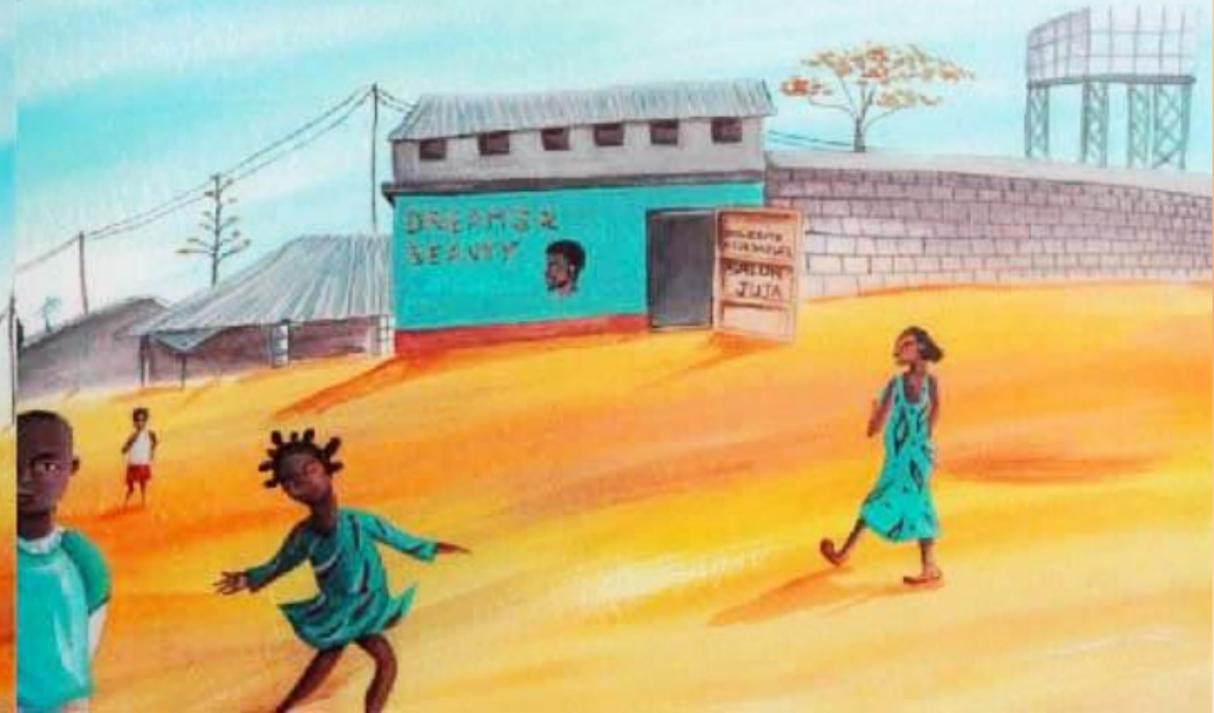
भाव विभोर लोपेज़ अमरीका लौट आया. उसकी माँ ने हरे, पीले और काले मनकों की एक माला बनाकर उसे दी थी. बीजिंग ओलिम्पिक में वह अमरीका के दल का ध्वजवाहक था. उस समय उसने माँ की बनाई माला को बड़े गर्व के साथ पहन रखा था.

बड़े अभिमान के साथ जब वह ध्वज लिए सबसे आगे चल रहा था तो उसने अपने जीवन के सारी घटनाओं के बारे में सोचा. युनिवर्सिटी छोड़ कर एक पेशेवर एथलीट बनने का निर्णय, जो मेहनत उसने की थी, जो साहस उसने दिखाया था, जो चोटें उसने सही थीं, और उसकी प्रियतमा की मुस्कराहट, सब चित्र उसके मानस पटल पर घूम रहे थे.

तीन साल बाद, जिस छोटे लड़के ने काकुमा की मिट्टी में एक लकड़ी की डंडी से लिखना सीखा था, उसने उत्तरी एरिज़ोना युनिवर्सिटी से डिग्री प्राप्त की. उसने अनुभव किया कि अगर मनुष्य किसी ध्येय को पाने के लिए पूरे मन से प्रयास करता है तो कोई भी रुकावट उसके सपनों के रास्ते में नहीं आ सकती.
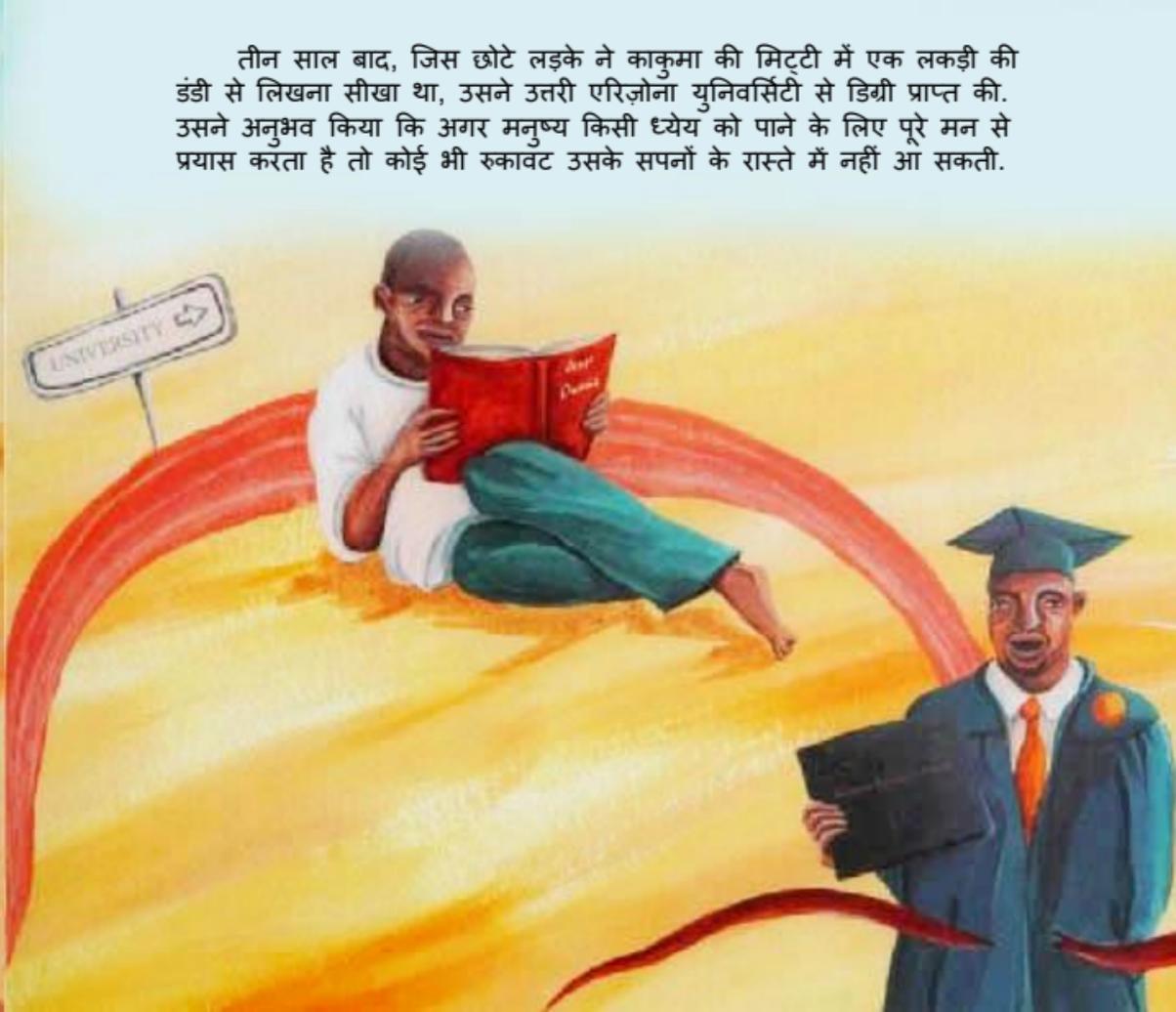
साइमन बहुत प्रसन्न था. वह व्यक्ति बहुत दूर से आया था और अपने साथ वह रंगीन पेंसिलें, ड्राइंग किताबें और शुभ समाचार लाया था. लोपेज़ लोमॉग फाउंडेशन उसके गाँव में पानी लेकर आएगी. जल ही जीवन था और पिछली रात से उसका जीवन बदल गया था.

एक दिन वह भी अपने सपने को साकार करने के लिए भरसक प्रयास करेगा, उसी तरह जिस तरह उस लड़के ने किया था जिसकी कहानी उस व्यक्ति ने सुनाई थी.

साइमन ने दुबारा अपनी कलाकृति को देखा और मुस्कराया. उसने उस लड़के का चित्र बनाया था जो अपने परिवार से बिछुड़ गया था और एक दिन ओलिम्पिक एथलीट बना था: यह लोपेज़ का चित्र था, चित्र में वह पोडियम पर खड़ा, अपना मैडल प्राप्त कर रहा था, उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे, उसका मैडल सूर्य समान चमक रहा था, जीवन भी एक मैडल देता है जब तुम अपने सपने साकार कर लेते हो.